Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue No. VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

लोक संस्कृति के स्वरूप एवं प्रासंगिकता एक विशलेषणात्मक अध्ययन

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue No. VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

लोक संस्कृति के स्वरूप एवं प्रासंगिकता एक विशलेषणात्मक अध्ययन

Priya Ranjan*

Research Scholar, Sociology, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

सारांश:- संस्कृति ब्रहम की भाँति व्यापक है। अनेक तत्वों का बोध कराने वाली, जीवन की विविध प्रवृतियों से संबंधित है, अतः विविध अर्थो व भावों में उसका प्रयोग होता है। मानव मन की वाहय प्रवृतिमूलक प्रेरणाओं से जो कुछ विकास हुआ है उसे सभ्यता कहेगें और उसकी अन्तर्मुखी प्रवृतियों से जो कुछ बना है, उसे संस्कृति कहेंगे। लोक का अभिप्राय सर्वसाधारण जनता से है, जिसकी व्यक्तिगत पहचान न होकर सामूहिक पहचान है। दीन-हीन, शोषित दलित, जंगली जातियाँ, कोल, भील, गौण्ड, संथाल, आदि समस्त समुदाय का मिला जुला रूप लोक कहलाता है। इन सबकी मिली जुली संस्कृति लोक संस्कृति कहलाती है। लोक संस्कृति समग्रता में विशिष्टता का अनुभव कराने वाली संस्कृति है। यह क्षेत्र विशेष की पहचान को भी स्थापित करता है। दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि उसे किस रूप देखे समग्र या क्षेत्र विशेष देखने में इस सबका अलग-अलग व्यवहार, नृत्य-गीत, कला-कौशल, भाषा बोली आदि सब अलग-अलग दिखाई देते है, परन्तु एक ऐसा सूत्र है जिसमें ये सब एक माला में पिरोई हुई मणियों की भाँति दिखाई देते है, यही लोक संस्कृति है लोक संस्कृति कभी भी शिष्ट समाज की आश्रित नही रही, उल्टे शिष्ट समाज लोक संस्कृति से प्रेरणा प्राप्त करता रहा है। लोक संस्कृति का एक रूप हमें भावा भिव्यक्तियों की शैली में भी मिलता है, जिसके द्वारा लोकमानस की मांगलिक भावना से ओत-प्रोत होना सिद्व होता है। वह दीपक के बुझाने की कल्पना से सिहर उठता है। इसलिए वह दीपक बुझाने की बात नही करता दीपक बठाने की बात करता है। इसी प्रकार दुकान बन्द होने की कल्पना से सहम जाता है, दूकान बढ़ाने की बात करता है। लोक जीवन की जैसी सरलतम, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोक गीतों व लोक कथाओं में मिलता है वैसा अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। लोक साहित्य में लोकमान का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती गुनगनाती है। लोक जीवन में पत्र-पत्र पर लोक संस्कृति के दर्शन होते है। लोक संस्कृति उतना ही पुराना है जितना कि मानव, इसलिए उसमें जन-जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है। लोक संस्कृति में समरसता होती है जो एक क्षेत्र विशेष को समता के भाव में जोड़े रहती है लोक संस्कृति लोगों को प्रेरणा तथा सहिषुणता प्रदान करती है। इसलिए यह आज भी प्रासंगिक है।

प्रमुख शब्द:- लोक, संस्कृति, अनुभूति, अभिव्यंजना, नैसर्गिक

---------------------------------X---------------------------------

प्रस्तावना

लोक संस्कृति, की अपनी अलग पहचान एवं विशेषता है। इसका सम्बन्ध किसी देश व क्षेत्र विशेष के सामान्य जन-समुदाय से होता है। समाज में प्रचलित विभिन्न क्रिया-कलाप, परम्पराये, अचार-विचार संस्कार, प्रथाएँ, कर्मकाण्ड, आस्था एवं विश्वास, लोक संस्कृति के आधारभूत तत्व है। किसी देश या क्षेत्र के नागरिकों की पहचान उनके अपने सभ्यता, संस्कार रहन-सहन तथा बोली-भाषा से की जाती है जो उस देश या क्षेत्र की संस्कृतिक वैशिष्टय के द्योतक है। सामान्य जनता के जीवन में व्यवहृत होने वाले विभिन्न परिस्थिगत अनिवार्य धर्म तथा कर्म न सिर्फ समाज को गतिशील बनाये रखते है बल्कि उन्हें क्षेत्र-विशेष को एक अलग पहचान दिलाते है। लोक संस्कृति के द्वारा समाज की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक व्यवस्था का प्रवाह सामूहिक रूप से निरंतर गतिशील रहता है। संस्कृति व्यक्ति एवं समाज के विकास का परिचायक होती है। लोक जीवन इसी संस्कृति का अक्षय भण्डार है। संस्कृति समाज को आकार देता है। मानव आदिम काल से अपनी बौद्धिक शक्ति के द्वारा समाज के सभी प्राणियों को प्रभावित एवं आश्चर्यचकित करता रहा है।

अपनी रचनाशीलता एवं सृजनशीलता के कारण व्यक्ति सृष्टि के समस्त जीवों की शक्ति एवं अधिपत्य का स्वामी रहता आया है। पं बलदेव उपाध्याय के अनुसार "लोक संस्कृति शिष्ट

संस्कृति की सहायक होती है। किसी देश के धार्मिक विश्वासो अनुष्ठानों तथा क्रियाकलापों के पूर्ण परिचय के लिए दोनों संस्कृतियो में परस्पर सहयोग अपेक्षित है।[1] लोक-संस्कृति व्यक्ति-व्यक्ति के श्रम से सिंचित एवं परिपुष्ट होती हुई प्रकृति की गोद में सेवित एवं विकास करती है। व्यक्ति का व्यक्ति के प्रति निश्छल एवं सहज प्रेम लोक संस्कृति का साध्य रहा है। श्रम की पूजा के साथ-साथ पारस्परिक प्रेम की उदान्त आपसी प्रेम के साथ विश्व बंधुत्व की भावना लोक संस्कृति का मूल जीवनी-शक्ति रही है। यहाँ पर मंगल भावना एक व्यक्ति न होकर सम्पूर्ण लोक के लिए होता है लोक संस्कृति सदा ही विकासशील लोक संस्कार पर आधारित रही है और यह संस्कार परम्परागत होकर भी रूढ़ि एवं जड़ता का पर्याय नहीं है। यह गतिशील, बृद्धिशील एवं प्रसार-प्रबल है यहाँ आनंद उसका मूल स्रोत है तथा मंगल भावना उसका प्राणतत्व है। यह व्यक्ति केन्द्रित न होकर जन केन्द्रित होती है। प्रकृति एवं व्यक्ति के दवंद्वात्मक रिश्तो में ही लोक संस्कृतियों का पुराना रूप सुरक्षित है जिसे लोक जीवन निरंतर प्रवाहमान नदी की तरह अनुप्राणित करता रहता है।

किसी देश तथा क्षेत्र का लोक जीवन वहाँ की संस्कृति का उदगम स्थल होता है एवं लोकसंस्कृति उस देश व क्षेत्र विशेष के जन समुदाय की सामूहिक ऊर्जा का स्रोत होता है। लोक जीवन का रस समाज की जड़ो को सींचता है। प्रो हरिशंकर आदेश के शब्दों में हम कह सकते है। संस्कृति जीवन शैली होती है जिसका निर्माण एक दिन में न होकर शनैः-शनैः शताब्दियों में हो पाता है। लोक संस्कृति के विकास में मनुष्यता की खोज संभव हो सकता है। यह लोक संस्कृति, लोक परम्पराओं, लोक साहित्य, लोक नाट्य, लोक गीत, लोक कला में सहज आत्मीयता के साथ उल्लासित है। लोक परम्पराओं के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के व्रत, त्योहार, प्रथाएँ मेले, रूढ़ियाँ एवं संस्कार आते है जिनके दवारा समाज में एकनिष्ठता एवं एकरूपता बनी रहती है। लोक साहित्य लोक मानस की सहज एवं स्वभाविक अभिव्यक्ति है यह प्रायः अलिखित रहता है तथा मौखिक परम्परा के दवारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ता रहता है। लोक साहित्य परिभाषित भाषा, शास्त्रीय रचना पद्धति एवं व्याकरणिक नियमों से रहित होता है। इसकी भाषा लोक भाषा होती है। लोक साहित्य के अन्तर्गत लोकगाथा, लोकगीत, सुभाषित उक्तियाँ, पहेलियाँ, लोकोक्तियाँ आदि आते है। लोकनाट्य का लोकजीवन से घनिष्ठ संबंध है। लोक से संबंधित विभिन्न अवसरो, उत्सवों तथा मांगलिक कार्यो के समय इनका अभिनय किया जाता है जैसे- जात्रा, कीर्तन, यक्षज्ञान, रामलीला, नौटंकी, तथा स्वांग आदि प्रमुख है। लोक जीवन के सुखो-दुःखो से संबंधित गीतो को लोकगीत कहा जाता है। इनमें सहजता, रसमगता और मधुरता पाई जाती है जो विभिन्न अवसरों, उत्सवों, व्रत, त्योहारों जैसे वैवाहिक कार्यक्रमों पर गाये जाते है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. लोक संस्कृति के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. लोक संस्कृति का समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. लोक संस्कृति की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

1. लोकसंस्कृति की कलात्मक विशेषताओं और उनकी रूचियोंको इंगित करती है लोककला। जिसमें मूर्तिकला, स्थापत्य कला, चित्रकला, मेंहदी, महावर, वास्तुकला आदि आते है। लोककला को लोक जीवन का आर्थिक मेरूदण्ड कहा जा सकता है। लोक संस्कृति जनमानस व सामान्य जन की संस्कृति है। इसे जनवादी संस्कृति भी कहा जाता है। गोर्की जनसंस्कृति जनमानस व सामान्यजन की संस्कृति है। इसे जनवादी संस्कृति भी कहा जाता है। गोर्की जनसंस्कृति की तुलना बिना तराशे हुए अनगढ़ पत्थर से करते है और कहते है कि लोकगीत, लोकनृत्य, लोककला और अन्य सांस्कृतिक रूप बिना तराशे गये पत्थरों की तरह है। लोक चेतना और उससे उपजी संस्कृति किसी भी सभ्यता और साहित्य की परिचालक शक्ति होती है जो साहित्य अपने लोक चेतना और शक्ति से जितना अधिक जुड़ा रहता है उतना सभ्य प्रतिनिधि होता है उतना ही कालजयी और लोकव्यापी होता है। लोक सांस्कृति के अंतर्गत संस्कृति और लोक दोनों का भाव छिपा है।कई बार किसी शब्द के अंतर्गत इतने अधिक अर्थो को समाहित कर लिया जाता है कि उस शब्द के किसी एक अर्थ को निश्चित करना अत्यंत कठिन हो जाता है।संस्कृति शब्द भी उसी प्रकार का है। संस्कृति को अनेक विद्वानों ने परिभाषित किया है। सर्वपल्ली राधाकृष्णन-संस्कृति वह वस्तु है, जो स्वभाव, माधुर्य, मानसिक निरोगता एवं आत्मिक शक्ति को जन्म देती है। श्री प्रभु दयाल मित्तल-संस्कृति किसी भी देश, जाति या समाज की आत्मा होती है, जिसमें देश, जाति या समाज के चिंतन, मनन, आचार-विचार, रहन-सहन, बोली, भाषा, वेशभूषा, कला, कौशल आदि सभी बातों का समावेश होता है।

इस प्रकार संस्कृति वह तत्व है जो हमारे जीवन को परिशिष्ट विवेक समृद्ध उदार और सर्जनशील बनाता है। सांस्कृतिक तत्व का मुख्य कार्य मानवीय जीवन को केवल उपयोगी क्रियाकलापों में धरातल से उठाकर चेतना या बोध की उस निरूपयोगी भूमिका में प्रतिनिधित्व करना है, जहां सार्थकता का रुचिकर आकलन एवं आल्हादपूर्ण उपयोग ही हमारा लक्ष्य बन जाता है। अब प्रश्न उठता है कि लोक क्या है? लोक का प्रयोग विशेष के प्रेरणा रुचि कला होते हैं, जिनके अनुसार वह कार्य करना चाहते हैं तथा ऐसे कार्यो को करने में उसे संतुष्टि व आनंद का अनुभव होता है। व्यक्ति के कार्य से उसका व्यक्तित्व प्रभावित होता है लोक

www.ignited.in

संस्कृति के अंतर्गत समाज एवं परिवार के उत्तरदायित्व का बोध, परस्पर संयोग, संवेदनशीलता, सहृदयता, पारिवारिक सदस्यों के बीच स्नेह एवं सामंजस्य आदि बातों में रुचि, लोक संस्कृति समाज एवं परिवार की लौकिक इकाई हैं। कोई भी मानक लक्ष्य तब सामान्य बन जाता है, जब उसमें कोई आमजन रुचि लेता है। इस प्रकार लोक, सांस्कृति तत्वों को उत्तरदायित्व के साथ संबंध, लोक सांस्कृति को समाज तथा परिवार के प्रमुख कारक प्रभावित करते हैं।

1. सामाजिक वातावरण व परिस्थिति

2. सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक, संस्कृति तथा स्वास्थ्य विषयक मूल्य

3. परिवार का आकार (संयुक्त या एकल)

4. परिवार की आवश्यकताएं

5. भविष्य के लिए योजना

6. माता-पिता, बच्चों के बीच कथन व्यवहार

7. पारिवारिक जीवन और रहन-सहन का स्तर

8. सामाजिक जीवन और व्यवहार

9. समाज की बदलती हुई भूमिका

10. समाज के दायित्व

11. लोगों की जागरूकता एवं रुचि

12. लोगों के समाज व परिवार के प्रति दृष्टिकोण

2. लोक संस्कृति जीवन की कार्यविधि है। भाषा, बोली, भोजन, वस्त्र, आस्था, पूजा, व्यवहार, गतिविधि, भाव, सोच, विचार, दर्शन आदि सभी संस्कृति के पक्ष है। सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि लोक संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसमें हम सोचते है और कार्य करते है। लोक संस्कृति जीवन के अभिन्न अंश है। यह वह गुण है जो हमें मनुष्य बनाता है। संस्कृति के बिना मनुष्य ही नहीं रहेंगे। लोक संस्कृति परंपराओं से, विश्वासों से जीवन की शैली से, अध्यात्मिक पक्ष से, भौतिक पक्ष से निरंतर जुड़ी है। यह हमें जीवन का अर्थ, जीवन जीने का तरीका सिखाती है। मानव ही संस्कृति का निर्माता है और साथ ही संस्कृति मानव को मानव बनाती है। संस्कृति व्यक्ति को नैतिक मानव बनाती है और दूसरे मानव के निकट संपर्क में लाती है और इसी के साथ हमें प्रेम, सहिष्णुता और शांति का पाठ पढ़ाती है। लोक संस्कृति समाज की क्रियाओं को सुगम और सुव्यवस्थित बनाती है। हम अपने आस-पास विभिन्न भाषाओं में बात करने वाले विभिन्न धर्मो और रीति-रिवाजों को मानने वाले लोगों को देखते हैं। यह विविधतायें खान-पान, पहनावे, नृत्य संगीत के क्षेत्र में भी विविधतायें हैं।लेकिन इस सब में एकात्मकता भी है जो सभी को एक साथ जोड़ने का काम करती है। लोक इसमें अहम भूमिका निभाती है। अतः जब तक उसकी स्वयं की सोच लोक संस्कृति के प्रति सकारात्मक नहीं होगी तो सद्भाव का उचित बीजारोपण नहीं कर सकेगी। अतः ऐसे में व्यक्ति लोक संस्कृति के प्रति सजग है या नहीं यह भी एक विचारणीय प्रश्न है। लोक संस्कृति के अंतर्गत संस्कृति के तत्वों के प्रति श्रद्धा, दायित्व, संरक्षण व हस्तांतरण हेतु परस्पर सहयोग सामंजस्य आदि में रुचि लेना तथा संस्कृति के आदर्श तत्वों को लोक सांस्कृति की संज्ञा दी जा सकती है जिसमें जनकल्याण की भावना समाहित होती है।

3. लोकसंस्कृति से अभिप्राय जन साधारण की उस संस्कृति से है जो अपनी लोक से प्राप्त करती है। जिसकी उत्स भूमि आम जनता है और बौद्धिक विकास के निम्न धरातल पर उपस्थित है। लोक संस्कृति शिष्ट संस्कृति की सहायक होती है। किसी देश के धार्मिक विश्वासों की सहायक होती है। किसी देश के धार्मिक विश्वासों, अनुष्ठानों तथा क्रियाकलापों के पूर्ण परिचय के लिए दोनों संस्कृतियों के परस्पर सहयोग अपेक्षित रहती है। इस दृष्टि से अथर्ववेद ऋग्वेद का पूरक है ये दोनों संहितायें दो विभिन्न संस्कृतियों के स्वरूप की परिचारिकाये है। जहाँ अथर्ववेद लोक संस्कृति का परिचायक है तो ऋग्वेद शिष्ट संस्कृति का दर्पण है। विभिन्न विद्वानों द्वारा लोक संस्कृति से संबंधित जो तथ्य निकलकर सामने आते है उसके अनुसार लोक संस्कृति के प्रमुख लक्षण निम्न है।

1. सामान्य जन की संस्कृति है।

2. इसका संबंध समाज के बहुसंख्यक निम्न वर्ग तक होता है।

3. अकृत्रिमता एवं सहजता प्रधान होती है।

4. श्रम और प्रेम मुख्य तत्व है।

5. प्रकृति से निकटतम संबंध।

6. सच्चाई, समर्पण और त्याग इसकी जीवन शैली है।

7. यहाँ की जनता धार्मिक, आस्थावान और अंधविश्वासी होती है।

8. इसका साहित्य मौखिक होता है।

9. मंगल कामना विश्वबंधुत्व की भावना, समदृष्टि और समरसता सर्वत्र पायी जाती है।

अध्ययन के उपकरण:-

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली में कुल 75 प्रश्नों का निर्माण किया गया है इसे तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है।

1. लोक संस्कृति के स्वरूप से संबंधित।

2. लोक संस्कृति का समाज पर प्रभाव से संबंधित।

3. लोक संस्कृति की प्रासंगिकता से संबंधित।

प्रश्नों का अधिभार वर्गीकरण:-

क्रमांक	प्रश्नों की प्रकृति	सम्भावित उत्तर		
		सहमत	अनिश्चित	असहमत
1	धनात्मक प्रश्नों का भरांक	2	1	0
2	ऋणात्मक प्रश्नों का भरांक	0	1	2

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में 200 लोगों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से किया गया है।

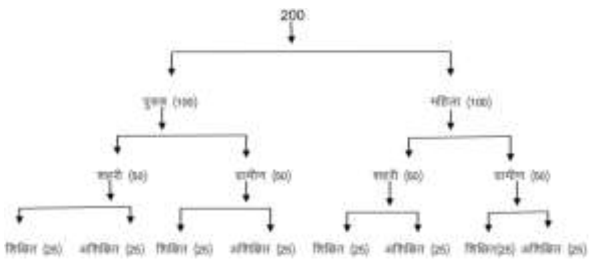

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं संख्याकी:-

प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी0 परीक्षण के आधार पर किया गया है।

परिकल्पना:-

1. लोक संस्कृति की प्रासंगिकता के प्रति पुरूष एवं महिला के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नही है।

2. लोक संस्कृति की प्रासंगिकता के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. लोक संस्कृति की प्रासंगिकता के प्रति शिक्षित एवं अशिक्षित लोगों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या-01

प्रासंगिकता के प्रति पुरूष एवं महिला के दृष्टिकोण

चर	वर्ग	N	Mean	S_D	S_E	T Value	df	Significant level	
लोक संस्कृति की प्रासंगिकता	पुरूष	100	89.4	2.62	0.26	0.91	198	0.05	0.01
	महिला	100	89.08	2.4	0.24			1.97 N.S	2.60 N.S

सारणी संख्या-02

प्रासंगिकता के प्रति शहरी एवं ग्रामीण लोगों के दृष्टिकोण

चर	वर्ग	N	Mean	S_D	S_E	T Value	df	Significant level	
लोक संस्कृति की प्रासंगिकता	शहरी	100	88.56	2.64	0.26	1.29	198	0.05	0.01
	ग्रामीण	100	88.08	2.76	0.27			1.97 N.S	2.60 N.S

सारणी संख्या-03

प्रासंगिकता के प्रति शिक्षित एवं अशिक्षित लोगों के दृष्टिकोण

चर	वर्ग	N	Mean	S_D	S_E	T Value	df	Significent	
लोक संस्कृति की प्रासंगिकता	शिक्षित	100	87.68	4.04	0.40	0.40	198	0.05	0.01
	अशिक्षित	100	87.88	2.90	0.29			1.97 N.S	2.60 N.S

सारणी संख्या-01 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि पुरूष एवं महिला के लोक संस्कृति के प्रासंगिकता के प्रति दृष्टिकोण के आधार पर प्राप्त मध्यमान क्रमशः 89.04 तथा 89.08 है वही मानक विचलन 2.62 तथा 2.42 है। मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जाचने के लिए t परीक्षण किया गया। प्राप्त t मान 0.91 है df के t मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 एवं 0.01 के सार्थकता स्तर 2.60 है प्राप्त t मान सारणी t मान से कम है। अर्थात् लोक संस्कृति के प्रासंगिकता के प्रति दृष्टिकोण में पुरूष एवं महिला में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या-02 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शहरी एवं ग्रामीण लोगों के लोक संस्कृति के प्रासंगिकता के प्रति दृष्टिकोण के आधार पर प्राप्त मध्यमान क्रमशः 88.56 तथा 88.08 है वही मानक विचलन 2.64 तथा 2.76 है। मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जाँचने के लिए t परीक्षण किया गया। प्राप्त t मान 1.29 है। क df के t मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 एवं

0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.60 है। प्राप्त t मान सारणी t मान से कम है। अर्थात् लोक संस्कृति के प्रासंगिकता के प्रति दृष्टिकोण में शहरी एवं ग्रामीण लोगों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या-03 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शिक्षित एवं अशिक्षित व्यक्ति के लोक संस्कृति के प्रासंगिकता के प्रति दृष्टिकोण के आधार पर प्राप्त मध्यमान क्रमशः 87.68 तथा 87.88 है वही मानक विचलन 4.04 तथा 2.90 है। मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता जाँचने के लिए t परीक्षण किया गया। प्राप्त t मान 0.40 है df के t मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 है एवं 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.60 है प्राप्त t मान सारणी t मान से कम है अर्थात् लोक संस्कृति की प्रासंगिकता के प्रति दृष्टिकोण में शिक्षित एवं अशिक्षित लोगों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

उपरोक्त सारणी विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते है। लोक संस्कृति की प्रासंगिकता के संदर्भ में पुरूष एवं महिला, ग्रामीण तथा शहरी लोग शिक्षित एवं अशिक्षित सभी व्यक्तियों ने माना कि लोक संस्कृति हमारे सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण प्रेरक तत्व है। लोक संस्कृति व्यक्ति को प्राचीन व्यवस्था से आधुनिक व्यवस्था को जोड़ने की एक कड़ी काम करता है। नियंत्रण और दृष्टिकोण को परिमारजीत करने का काम करता है क्योंकि संस्कृति किसी भी समाज की प्राणवायु है तो लोक संस्कृति धमनियाँ है। लोक संस्कृति, अपनी विविधता को मूल संस्कृति में पिरोने का कार्य करती है। लोक संस्कृति जीवन में जागृति पैदा करती है सकारात्मक सोच व उत्साह लाती है। ये सोच जीवन की वे संजीवनी बूटियाँ है जो पतझड़ में बसन्त का काम करती है। सरल शब्दों में हम कह सकते है कि लोक संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसमें हम सोचते है और कार्य करते है।

लोक संस्कृति जीवन के अभिन्न अंश है यह वह गुण है जो हमें सामाजिक मानव बनाता है लोक संस्कृति परमपराओ से विश्वासों से जीवन की शैली से, अध्यात्मिक पक्ष से नैतिक पक्ष से तथा भौतिक पक्ष से भी निरंतर जुड़ी है। यह हमे जीवन का अर्थ जीवन जीने का तरीका सिखाती है। व्यक्ति ही लोक संस्कृति तथा व्यक्ति को प्रभावित कर सामाजिक बनाता है। लोक संस्कृति एक दूसरे को निकट लाता है प्रेम सहिष्णुता, शन्ति और प्रेम का पाठ पढ़ाता है। मनुष्य अपने आस-पास विभिन्न भाषाओं में वात करने वाले विभिन्न धर्मो और रीति-रिवाजों को मानने वाले लोगों को देखते है, ये विविधताएँ, खान-पान पहनावे, नृत्य, संगीत, कला के क्षेत्र में है। लेकिन इस सब में एकात्मकता भी है जो सभी को जोड़ने का काम करती है।

इन्हीं आधार पर सभी लोगों ने लोक संस्कृति के सामाजिक प्रभाव और प्रासंगिकता को एक स्वर में स्वीकार किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आदेश प्रो0 हरिशंकर - भारतीय संस्कृति तथा हिन्दी
2. समाज काशी विद्यापीठ वर्ष 2004 अंक-03, पृष्ठ-453
3. द्विवेदी आचार्य हजारी प्रसाद – स्वतंत्रता और संस्कृति-पृष्ठ संख्या-33
4. सिंह डॉ. अरूण कुमार-मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में सांख्याकी
5. माथुर डॉ. एस. एस.-समाज मनोविज्ञान

Corresponding Author

Priya Ranjan*

Research Scholar, Sociology, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur